दैनिक भास्कर

3/7/14

टोंक भास्कर

चारा विकास में वरदान अरडू

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में चारा उत्पादन की त्रिस्तरीय कृषि एवं वानिकी नई तकनीक विकसित की है, पेड़ की छाया में कम पानी में भी चारे का उत्पादन

भास्कर न्यूज | मालपुरा

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान में भेड़ बकरी व खरगोश के साथ-साथ चारा व चरागाह विकास पर भी नए अनुसंधान कर पानी की कमी के बावजूद मवेशियों के लिए चारा उत्पादन की तकनीक विकसित की गई है। अविकानगर में इस भीषण गर्मी के बावजूद अरडू के पेड़ की छाया में आसानी से चारे का उत्पादन किया जा रहा है। कम पानी की स्थिति में फसलें उगाई जा सकती हैं। संस्थान के चारा एवं चरागाह अनुभाग के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एस.सी. शर्मा के अनुसार अनुभाग द्वारा विकसित नवीन तकनीक के अनुसार अरडू के पेड़ लाभदायी सिद्ध हुए हैं। संस्थान में चार हजार अरडू के पेड़ चारा विकास योजना के लिए वरदान साबित हो रहें हैं। अकाल व पानी की कमी के बावजूद चारा व फसल उत्पाद की इस तकनीक को त्रिस्तरीय कृषि एवं वानिकी नाम दिया गया है। त्रिस्तरीय कृषि वानिकी तकनीक के तहत खेतों में अरडू के पेड़ लगा कर उसके नीचे की जमीन पर चारा उगाने तथा चारे की पट्टी के बाद की जमीन पर फसल उगा कर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि आपात स्थिति में भी अगर फसल नहीं हो तो 40 प्रतिशत क्षेत्र में अरडू की छाया में उगाया गया चारा आवश्यक रूप से प्राप्त होगा। वैज्ञानिक डॉ. एस.सी. शर्मा ने बताया कि अरडू आधारित त्रिस्तरीय कृषि वानिकी में प्रति इकाई भूमि से प्रति इकाई समय में अधिकतम अनाज व चारा उत्पादन किया जा सकता है। अरडू के वृक्ष गर्मी में वायु अवरोधक के रूप में कार्य करते हैं इससे चारे में नमी अधिक समय तक संरक्षित रहती है। अकाल के समय में अरडू की पत्तियां जानवरों के चारे के रूप में उपयोग में ली जाती है। अरडू का पेड़ वायु प्रदूषण को कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित कर वातावरण सुधार करता है।

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान में अरडू के पेड़ों के नीचे उगाया गया हरा चारा।

यह होता है फायदा

डॉ. एस.सी. शर्मा ने बताया कि अरडू का पेड़ भूसंरक्षण के क्षेत्र में भी लाभदायी है। पेड़ अर्ध शुष्क क्षेत्र के लिए उत्तम चारा वृक्ष है। इसमें प्रोटीन की मात्रा बीस प्रतिशत होती है यह पशुओं के स्वास्थ्य के लिए लाभदायी है। अरडू में कैल्शियम व फॉस्फोरस भी खूब होता है। यह पेड़ जल्दी बढ़ता है जिससे जानवरों के चारे की कमी नहीं रहती है। पेड़ के नीचे व आस पास बोई जाने वाली फसलों में भी तेजी से वृद्धि होती है। खेती व चारा उत्पादन के लिए त्रिस्तरीय कृषि वानिकी जोखिम मुक्त योजना है। अकाल में भी 40 प्रतिशत चारा उत्पादन किया जा सकता है। अविकानगर में चार हजार अरडू के पेड़ का चारा भेड़ बकरियों के लिए पौष्टिक आहार साबित हो रहा है। अरडू की त्रिस्तरीय कृषि योजना की जानकारी के लिए संस्थान के वैज्ञानिक किसानों से लगातार संपर्क कर रहें हैं।

मालपुरा. मवेशियों को अकाल के समय में भी अरडू के पेड़ों से मिलता है भरपूर हरा चारा।